



तो खतरे में पड़ जाएगा 'आसमानी रंग'!

कानपुर, जागरण संवाददाता: चौंकिये नहीं! अगर हम अभी भी नहीं चेते तो वो दिन दूर नहीं जब नीला आसमान काला हो जाएगा। वायु मंडल में तेजी से बढ़ रहे प्रदूषण से आसमानी रंग के अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया है। पर्यावरण विज्ञानियों के शोध परिणामों की मानें तो प्रदूषण बढ़ने से लोगों को सांस लेने में मुश्किलें तो होंगी ही, आसमानी रंग भी अपनी पहचान खो देगा।

खतरे की यह चिंता किसी लेखक या कवि ने नहीं बल्कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) व अमेरिकी पर्यावरण विज्ञानियों ने पर्यावरण और प्रदूषण पर महत्वपूर्ण शोधों के आधार पर जताई है। यह सच तो सामने है कि दिल्ली व उसके आसपास हवा में कार्बन पार्टिकल्स रूपी जहर से लोगों को सांस लेना मुहाल हो रहा है। उधर शोध के निष्कर्ष गवाह हैं कि यदि वायुमंडल में कार्बन के कणों का बढ़ना यूं ही जारी रहा तो एक दिन नीला आसमान पहले सफेद होगा और बाद में काला भी पड़ सकता है।

नहीं देख पाएंगे आकाश गंगा : रूटगेस (अमेरिका) में पर्यावरण विज्ञान के प्रोफेसर एलेन रोबोक का जर्नल इमोशन में प्रकाशित शोध के मुताबिक जलवायु में हो रहे बदलाव के चलते धरती द्वारा सूरज की रोशनी को अंतरिक्ष में परावर्तित करने और उसको सोखने की प्रक्रिया (अल्बीडो) पर काफी असर पड़ा है। आसमान धूमिल हो रहा है। हालात ऐसे ही रहे तो आसमान का रंग सफेद व हल्का काला हो जाएगा। कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान के प्रोफेसर डैचर केल्टनर ने भी एक शोध में आसमान का रंग बदलने के तथ्यों के साथ चेताया है कि ऐसा ही चलता रहा तो हम रात को आकाशगंगा नहीं देख पाएंगे।

आइआइटी की चिंता: वायुमंडल को गंदा करने वाले कणों की हर क्षण निगरानी करने वाली

- ◆ दिनोदिन बढ़ते वायु प्रदूषण से मैला हो रहा आसमान
- ◆ अमेरिका व आइआइटी के वैज्ञानिक जता चुके हैं गहरी चिंता

कूड़ा व पराली जलाने से संकट

लकड़ी, कोयला, चूल्हा, कूड़ा, पराली व प्लास्टिक जलाने, आतिशबाजी छोड़ने, पुतले फूंकने, तेज हवा से धूल उड़ाने, डीजल व पेट्रोल के दोपहिया बड़े वाहनों से निकलने वाले धुएं आदि से विश्व भर में वायुमंडल में एयरोसॉल लगातार बढ़ रहा है।

आइआइटी के सेंटर फॉर इनवायरमेंटल साइंस की अत्याधुनिक मशीनों (हाई रेजोल्यूशन टाइम अप्लाइड एरोसॉल मॉस स्पेक्ट्रोमीटर व सिंगल पार्टिकलसोर स्पेक्ट्रोमीटर) के रिकार्ड बताते हैं कि बीते पांच सालों से वायुमंडल में कार्बन कण लगातार बढ़ रहे हैं।

इससे मौसम चक्र तो बदल ही रहा है, आसमान का रंग भी बदल रहा है। कार्बन डाई आक्साइड जैसी ग्रीन हाउस गैसों व वायुमंडल में लगातार बढ़ रहे एयरोसॉल (ऐसे ठोस कण जिसमें कार्बन व गैसीय कण शामिल हैं) से ऐसे बदलाव हो रहे हैं। सेंटर फॉर इनवायरमेंटल साइंस के विज्ञानी डॉ. सच्चिदानंद त्रिपाठी ने भी चेताया कि वायुमंडल में लगभग 78 फीसद नाइट्रोजन व शेष मुख्यतया ऑक्सीजन है। नाइट्रोजन सूर्य की किरणों को एब्जॉर्व करके परावर्तित करती है जिससे नीली चमक पैदा होती है। वायुमंडल में जम रही कार्बन की परत से नाइट्रोजन काफी ऊपर है। जिसके चलते नीली चमक कमजोर पड़ रही है।